Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

बंजारा लोकगीतों में देवी-देवताओं की आराधना

पवार सुरेखा मोतीराम
शोध छात्रा, हिंदी विभाग
के. जे सोमैया महाविद्यालय
कोपरगांव, जि.अहिल्यानगर

प्रो (डॉ.) अनिता पोपटराव नेरे
म.स.गा कला वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय, मालेगाँव कैम
जिला, नाशिक:- 423203

बंजारा संस्कृति, जो मुख्य:त उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में फैली हुई हैं। अपनी अनूठी परंपराओं और लोकगीतों के लिए जानी जाती हैं। बंजारा समुदाय का जीवन और उनकी आस्था देवी-देवताओं के प्रति गहरी निष्ठा से भरी हुई है। बंजारा समाज के लोकगीतों में देवी-देवताओं की आराधना धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करते हैं। बल्कि समाज की सांस्कृतिक पहचान को भी उजागर करते हैं।

बंजारा लोकगीतों में देवी-देवताओं की आराधना का आरंभ प्राचीन काल से होता आया हैं। यह गीत आमतोर पर विशेष अवसरों जैसे त्योहार, विवाह, और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान गाए जाते हैं। बंजारा समाज के लोकगीतों में देवी-देवताओं की महिमा का गुणगान किया जाता है और इनमें आशीर्वाद का प्रार्थना की जाती है। जिसमें समुदाय की एकता और समर्पण की भावना को बल दिया मिलता है।

बंजारा समाज के लोकगीतों में देवी- देवताओं की विभिन्न कथाएं उनकी शक्तियां और उनके प्रति श्रद्धा के भाव व्यक्त किया जाते हैं। उदाहरण के लिए सतीशाम का आडी सतीसामतदादा,सेवालाल महाराज आदि देवी- देवताओं की, शक्ति की कथाएं सुनाई जाती है। जब कि, सेवालाल महाराज ने बंजारा समाज को नैतिक और धार्मिक शिक्षाएं दी उन्होंने भक्ति और कर्म का मार्ग दिखाएं और समाज की एक सशक्त दिशा में आगे बढ़ने का कार्य किया सेवालाल महाराज ने अंग्रेजी के खिलाफ बंजारा समाज को एकजुट कर संघर्ष की आवेश स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत माने जाते हैं। उन्होंने अपने समय में अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई यह भी कथाए और बंजारा लोकगीतों में गाए जाते है।

बंजारा लोकसाहित्य अभी-भी पूरी तरह से लिखित-संकलित रूप में नहीं है। लोगों की जागरूकता, एवं सभा, सम्मेलन संगोष्ठियों के माध्यम से वह संकलित एवं लिखित रूप में हमारे सम्मुख आ रहा हैं। आज आवश्यकता है, लोकसाहित्य को संपूर्ण रूप से लिखित-संकलित किए जाने

की। और इस पर गहन चर्चा, गोष्टी आदि का आयोजन हो, समीक्षा हो क्योंकि लोकसाहित्य हर समाज का इतिहास होता हैं। जो मौखिक रूप से आज भी जीवित हैं। लोकसाहित्य की उत्पत्ति और विकास लोक में ही होता हैं। लोक में जन्म लेता है। और लोगों में ही विकसित हो जाता है। इसीलिए लोकसाहित्य का कोई एक इनसान नहीं होता। बल्कि उसका लेखक संपूर्ण लोक होता है। इसीलिए इस साहित्य को लोकसाहित्य कहा जाता है। आधुनिक साहित्य की भांति लोकसाहित्य की भी विधाए होती हैं। और जिसमें लोककथा, गाथा, नृत्य, संगीत नाट्य आधि विधाए होती है। संपूर्ण विश्व में बंजारा जनजाति 20 करोड़ से भी अधिक हैं। बंजारा लोकसाहित्य में लोकगीत शीर्ष पर है। लोकगीत में जहां तीज त्योहार-उत्सव, जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीत खुशी के गीत दु:ख के गीत परिश्रम- प्रकृति आदि से संबंधित गीत दिखाई देते हैं। वहीं गीत देवी-देवताओं से सम्बंधित गीत-भजन, कीर्तन, भी अपना एक अलग स्थान रखते हैं।

उन्हीं देवी-देवताओं पूजा के गीत की समीक्षात्मक अध्ययन यहां प्रस्तुत है।

1) ईश्वर का स्वरूप एवं देवी देवता की पूजा
2) ईश्वर का नामस्मरण
3) विश्व-कल्याण की भावना
4) मानवतावाद
5) एकता, बधूता, समता
6) प्रकृति चित्रण
7) देवी-देवताओं की पूजा और लोकगीतों में संगीत

1) ईश्वर का स्वरूप एवं देवी-देवताओं की पूजा:-

भक्ति के क्षेत्र में भक्त और ईश्वर का होना अनिवार्य होता है। बिना ईश्वर एवं बिना भक्त के भक्ति संभव नहीं होती। भक्त का ईश्वर तक पहुंचाने का साधन भक्ति याने देवी-देवताओं की उपासना होती हैं। हर भक्त का अपना एक आराध्य देवता होता है। जिसके सम्मुख वह अपनी भक्ति प्रकट करता है। बंजारा लोकसाहित्य-लोकगीतों का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि बंजारा जनजाति किसे अपना ईश्वर या आराध्या मानती है। और उसकी भक्ति पद्धति क्या है। बंजारा जनजाति यह पद्धति पूजक है। वह सबसे पहले प्रकृति को अपना ईश्वर मानती है। वह चन्द्र-सूर्य, तारे, गाय-बैल, पेड़-पौधे, खेत-खलिहान, पहाड़, नदी के अनाज आदि के प्रति समर्पित दिखाई देती है। बंजारा समाज अपने लोकगीतों एवं प्रकृति की प्रशंसा करते हुए कहता हैं।

चल रे बादल दूर गायें

मार पानी र प्यास बुझा द,

सुखी धरती, प्यासी नदी मीठों पानी बरसा द
ऊंचे डूंगर हरे बगेम, कोयल मीठों गीत गांव
चांद ज्योत जलाव।
पवन चलो जब, रिमझिम पानी पड़
मन मारो नाच उठ।
हम बंजारे प्यारे निसर्गी रे।
गीत खुशी रे गारे।

प्रकृति के बाद में बंजारा समाज के लोग सेवालाल महाराज की आराधना करते हैं। क्योंकि सेवालाल महाराज बंजारा समाज का आराध्य देवता है। सेवालाल महाराज बंजारा समुदाय के महान संत योध्दा और सुधारक थे। सेवालाल महाराज का जन्म 18 शताब्दी में हुआ था। उन्होंने बंजारा समाज के लिए न्याय समानता और आत्मसम्मान की भावना हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके उपदेश और कार्यो को बंजारा लोकगीतों में बहुत सम्मान के साथ गाया गया हैं। बंजारा लोकगीतों में सेवालाल महाराज को एक दिव्य आत्मा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिन्होंने अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया और अपने समुदाय को आत्मज्ञान, शिक्षा नैतिक मूल्यों की राह दिखाई उनके बारे में गाए जाने वाले लोकगीत उनके वीरता पूर्ण का कार्यों, समाज और भक्तिभाव को दर्शाते हैं।

तुम होता तमार जिवणेंम दिलों लगा सको छो।
कोई केनी भजो मत। कोई केनी पूजो मत।
कोई केती कमी छेनी। भजनेम वेल घालेपेक्षा।
कर्म करेर शिको, मारे शिकवाडी पर ध्यान दिजो
जानजो, छानजो अन पचज मानजो। कोई

इस लोकगीत के माध्यम से बंजारा समुदाय के लोक को संत सेवालाल महाराज संदेश दिया है। बंजारा समुदाय के लोग तुलजा भवानी को अपनी मुख्य देवी मानते हैं, अपने बच्चों के बाल को तुलजा भवानी को दान करते हैं।

"जय तुलजा भवानी, अंम्बा, मरयामा, कंकाली,
हिंगला, दुर्गा, आदिमाया, शक्ति जगत
जननी याडीसाहेबनी सेनसावासेर करेस"

2) **नामस्मरण**:-

भारतीय भक्ति साहित्य एवं लोकभक्ति साहित्य में नामस्मरण की महिमा का विशेष रूप देखा जा सकता है। हिंदी, मराठी, तमिल, गुजराती आदि में लिखित एवं परंपरा से चली आ रही मौखिक लोकसाहित्य में अपने देवी-देवताओं की पूजा के साथ नामस्मरण किया जाता है। मनुष्य को दु:ख, निराशा, पीड़ा, क्रोध, इर्षा द्वेष, ग्लानी आधि आदि का सामना करना पड़ता है। मनुष्य का जीवन अनमोल एवं क्षणभंगुर होने के कारण आराध्य संत ईश्वर आदि में नामस्मरण की महिमा गाई जाती है। बंजारा समुदाय के लोग प्रकृति, देवी एवं संतों भगवान मानते हैं, यही कारण है कि वह बंजारा गुरु-संत सेवालाल जी का नामस्मरण करते है। यदि, क्रोध, काल आदि को पराजित करना है, तो बंजारा समुदाय के लोग कहते हैं। कि, "तुम्हें सेवालाल महाराज का नामस्मरण करना होगा"

सारी जगेम रे सेवाभाया तारो नामेरो ढपडा वजाया,
केते थे छोटी जात बंजारा ओनून अब बताया,
तारे नामे से जगरे छा तारे नामे शी मर भी जाता,
तांडे-तांडेम तारी छ माया सारी गोरु तु सेवाभाया।

3) **बंजारा लोकगीतों में विश्व कल्याण की भावना**:-

बंजारा समुदाय में लोकगीत न केवल सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को दर्शाते हैं। बल्कि सभी जीवो के सुख, शांति और समृद्धि की प्रार्थना भी करते हैं। बंजारा लोकगीतों में सभी के सुखी और समृद्ध होने की कामना की जाती है। बंजारा लोकगीतों में समाज में एकता और प्रेम का संदेश देते हैं। बंजारा समुदाय प्रकृति पूजन होता है। बंजारा समुदाय के लोकगीतों में नदियों, पहाड़ों, वृक्षो और धरती मां की महिमा गाई जाती है। जिससे संपूर्ण विश्व का संतुलन बना रहे। बंजारा समुदाय के लोकगीतों में जाति, धर्म, और वर्ग से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता की भलाई की कामना की जाती है। ये गीत प्रेम भाईचार और सहीष्णूता को बढ़ावा देते हैं, ये गीत परिश्रम, सच्चाई और नैतिकता का संदेश देते हैं। जिससे समाज और विश्व में प्रगति और सुख:शांति बनी रहे। बंजारा समाज के लोकगीतों में सभी को एक साथ मिलकर रहने बांटने और सहयोग करने की प्रेरणा दी जाती है। जिससे सामाजिक और संपूर्ण विश्व का कल्याण संभव हो सके। बंजारा समुदाय के लोकगीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं है। बल्कि वे आत्मज्ञान और नैतिक मूल्यो से भरपूर होनते है। जो संपूर्ण विश्व कल्याण की भावना को व्यक्त करते हैं।

4) **मानवतावाद**:-

विश्व के प्रत्येक लोकसाहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञान होगा कि, किसी ने भी मनुष्य-मनुष्य के भेदभाव करना नहीं सिखाया जितने भी महापुरुष ने जन्म लिया। उन्होंने भी मानवता को

सबसे ऊपर रखा मानवतावाद मनुष्य को मनुष्य की नजर से देखना समझना सिखाता है, आपस में मिल-जुल कर रहना सिखाता है। भाईचारा बंधुत्व की भावना समझना सीखता है, आपस में लोकसाहित्य के लोकगीत भक्ति इस विधा में भी मानवतावाद का संदेश हमें देखने को मिलता है, बंजारा समुदाय में भक्ति गीत कबीर, तुलसीदास की भांति बंधुता एकता को संदेश देता है, कबीर ने ईश्वर भक्ति मे जाति धर्म से श्रेष्ठ मनुष्य को माना था

जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार की, पडा रहने दो म्यान।।
जाति-पति पूछेंन कोई हरि को भेजी सो हरी का कोई।।

बंजारा लोकगीतों में बंजारा लोकगीतों में बंजारा जाति-धर्म संप्रदाय से ऊपर मानवता का श्रेष्ठ माना जाता है। वर्णित संत सेवालाल जी ने भी मानवतावाद का ही संदेश देते हुए कहा धर्म की राह दिखाने आए, ज्ञान का दिया जलाए, सत्य अहिंसा अपनाओ रे सेवा भाया का संदेश सुनाओ

5) एकता बंधुता समानता:-

बंजारा समुदाय का समृद्ध लोकसंगीत उनकी सांस्कृतिक संपत्ति और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग है। बंजारा समुदाय के लोकगीतों में सामूहिकता और समुदाय की शक्ति को दर्शाया जाता है। बंजारा समुदाय के लोकगीत बताते हैं की, बंजारो ने अपनी यात्रा में हमेशा मिलकर काम किया है। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या मुसीबत के समय ये गीत लोगों के साथ रहने और एक-दूसरे का सहयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं।

साथ चलो रे संग जियो रे
राहों में कांटे हैं, हाथ थाम लो रे

बंजारा समुदाय के लोकगीतों में भाईचारे और परस्पर प्रेम की भावना झलकती है। ये गीत जाति, धर्म, किसी भी भेदभाव के ऊपर उठकर मानवीय संवेदनाओ को प्राथमिकता देते हैं। इके गीतों में दोस्ती आपसी सहयोग और परिवार जैसी भावना का बल दिया जाता है।

हम सारी साथ छ,
मातीर खूशबू साथ छ,

बंजारा समुदाय के लोकगीत इस बात पर जोर देते हैं की, मेहनत करनेवाला हर व्यक्ति बराबर है। चाहे वह अमीर हो या गरीब उनके गीत श्रम की महत्ता को दर्शाते हैं, और किसी भी उंछ-नीचे की भेदभाव को अस्वीकार करते हैं।

6) प्रकृति चित्रण:-

मनुष्य का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ जब मनुष्य ने पहली बार आंखें खोली तो उसने अपने आस-पास का परिसर देखा प्रकृति प्रकृति का सौंदर्य देखा। और उससे अभिभूत हो गया वह प्रकृति में जिया पला-बढ़ा। प्रकृति ने उसे जल-अन्न और रहने के लिए आसरा दिया मनूष्य को कैसे भूल सकता था। यही कारण है कि, मनुष्य ने प्रकृति को ईश्वर माना है बंजारा जनजाति ने भी प्रकृति को ईश्वर माना है।

झाड़ी मारी आंटी डुंगर मारो बाप रे।
उड़े खोलाम मोर भूलीयाई म।।

बंजारा जनजाति के लोग प्रकृति को ईश्वर मानते हैं, हजारों सालों से लेकर आज तक बंजारा समुदाय के लोग लोकगीतों में प्रकृति के चित्रण हमें देखने को मिलता है उनका प्रत्येक गीत मानो प्रकृति से जुड़े हुए हैं। बंजारा समाज के लोकगीत प्रकृति के बिना अधूरे हैं, भक्ति गीतों में दिवाली, होली, तीज, दशहरा, भोग, आदि अवसर पर गाए जाने वाले गीत प्रकृति के होते दिवाली में गोधन तथा विभिन्न पुष्पों की पूजा की जाती है, तो समय गेहूं आदि की पूजा की जाती है, बंजारा प्रकृति में देवी का रूप एवं देवी में प्रकृति का रूप देखाता है। बंजारा समुदाय के प्रत्येक तीज त्योहार-उत्सव प्रकृति से जुड़ा हुआ है, दशहरे के समय गाये जाने वाले भक्ति गीत में लोग कवि प्रवृत्ति के प्रति अपने आपको को समर्पित करते हुए, प्रकृति की हृदय से प्रशंसा करते हैं।

दुगरि गुड्डी आंगे चोकेरी कतार
बकरा कटरे हजार पान भिडलोर
तूलजारे गुडी आंखें चोकेरी कतार
नींबू कटरे हजार पाना भिडलोर
बागीरी गुड्डी आंगे चोकेरो कतार
भगत खेलरे हजारों पान भिडलोर
दंडीर गुड़ी आंग चोकेरी कतार
धजा चडरे हजार पान भिडलोर।

बंजारा समुदाय में तीज यह उत्सव बंजारा समाज की लड़कियां बड़े धूमधाम से मनाती है। तीज यह त्योहार कुंवारी लड़कियों का त्यौहार है, दस दिन मनाया जाता है, बास की टोकरी में काली मिट्टी डालकर गेहूं बोआ जाता है। और दस दिनों तक कुंवारी लड़कियां उसे पूरे भक्ति भाव से पानी से डालती है, वास्तव यह पूजा-गन गौर की पूजा होती है, जिसकी जितनी समृद्ध गेहूं होगा। मानो

प्रकृति ने उसे इच्छा पूर्ति का वरदान दिया है। तीज को जल अर्पित करते समय बंजारा समुदाय की लड़कियां गीत गाती है

"तीज आयो रे सावन घनघोर
कुंवारी छोरी करे सिंगार
झूले पड़े पीपल की डाल
नाचे रे गोरी कर रास रचाया"

7) **भक्ति गीतों में संगीतात्मकता**:-

प्रत्येक समाज में लोकगीत की अपनी एक शैली होती है। उसका अपना एक संगीत होता है। लय-ताल सब कुछ निराला होता है, वह लोकगीत चलते ही व्यक्ति-समाज के हृदय में एक अलग सी हलचल पैदा करता है। क्योंकि लोकगीत हृदय से निकलता है, और हद्य में ही बसता है। लोकगीत शास्त्रीय संगीत की भांति आनंद देता है। वह सहज रूप से उत्पन्न होता हैं। बंजारा भक्ति गीत भी सहज रूप से उत्पन्न देता हैं। जो पीढ़ी-दर-पीढी चला रहा है। जब लोग कवि भक्ति गीत गाता है। तो एक अलग समा बन जाता है, जो ईश्वरी आनंद प्रदान करता है।

संदर्भ:-

बंजारा लोकगीतों का संस्कृत अध्ययन
लेखक:- डॉ. आडे गणपत रावण
संदर्भ:-बंजारा बोली भाषा एक अध्ययन
लेखक:- डॉ. मोहन लक्ष्मणराव चव्हाण
संदर्भ:- बंजारा लोकसाहित्य आणि सं लोकसंस्कृति
लेखक:- डॉ. तुकाराम रतन चव्हाण
संदर्भ:- बंजारा जाति और संस्कृति
लेखक:- डॉ एन देवदास
संदर्भ:- बंजारों का इतिहास
लेखक:- डॉ. भीमराव नायक
संदर्भ:- बंजारा एक आदिवासी समाज का लोक जॉन और गीत
लेखक:- डॉ. रमेश नाथ